FAZAILE SADAQAA (HINDI BAYAAN)

फ़ज़ाइले सदक़ात

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िम्नन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे वाला तबार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।

(فردوس الاخبار، ج ۲/ ۴۷۱، حدیث ۸۲۱۰)

चारए बे चारगां पर हों दुरूदें सद हज़ार
बे कसों के ह़ामी व ग़म ख़्वार पर लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

www.dawateislami.net

बयान सुनने की नियतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की नियतें :

मैं भी नियत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नह्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 4361) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً : "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" (بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر عن بنی اسرائیل، ۲/۴۶۲، حدیث: ۳۴۶۱) में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

चार दिरहमों के बदले चार दुआएं

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़, माया नाज़ तस्नीफ़ 'फ़ैज़ाने सुन्नत' जिल्द अव्वल के बाब फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, सफ़हा 114 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक रोज़ वा'ज़ फ़रमा रहे थे, किसी ह़क़दार ने चार (4) दिरहम का सुवाल किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ए'लान फ़रमाया : जो इस को चार (4) दिरहम देगा, मैं उस के लिये चार (4) दुआ़एं करूंगा। उस वक़्त वहां से एक ग़ुलाम गुज़र रहा था, एक वलिये कामिल की रह़मत भरी आवाज़ सुन कर उस के क़दम थम गए और उस के पास जो चार (4) दिरहम थे वोह उस ने साइल को पेश कर दिये। ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : बताओ कौन कौन सी चार (4) दुआ़एं करवाना चाहते हो ? अ़र्ज़ किया (1) मैं ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया जाऊं (2) मुझे इन दराहिम का बदला मिल जाए (3) मुझे और मेरे आक़ा को तौबा नसीब हो (4) मेरी, मेरे आक़ा की, आप की और तमाम ह़ाज़िरीन की बख़्शिश हो जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हाथ उठा कर दुआ़ फ़रमा दी। ग़ुलाम अपने आक़ा के पास देर से पहुंचा, आक़ा ने सबबे ताख़ीर दरयाफ़्त किया तो उस ने वाक़िआ़ कह सुनाया। आक़ा ने पूछा : पहली दुआ़ कौन सी थी ? ग़ुलाम बोला : मैं ने अ़र्ज़ किया : दुआ़ कीजिये ! मैं ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया जाऊं। येह सुन कर आक़ा की ज़बान से बे साख़्ता निकला **''जा तू ग़ुलामी से आज़ाद है।''** पूछा : दूसरी दुआ़ कौन सी करवाई ? कहा : जो चार (4) दिरहम मैं ने दे दिये हैं, उस का ने'मल बदल मिल जाए। आक़ा बोल उठा **''मैं ने तुझे चार** (4) **दिरहम के बदले चार हज़ार दिरहम दिये।''** पूछा : तीसरी दुआ़ क्या थी ? बोला : मुझे और मेरे आक़ा को गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हो जाए। येह सुनते ही आक़ा की

www.dawateislami.net

ज़बान पर इस्तिग़फ़ार जारी हो गया और कहने लगा : **''मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने तमाम गुनाहों से तौबा करता हूं।''** चौथी दुआ भी बता दो। कहा : मैं ने इल्तिजा की, कि मेरी, मेरे आक़ा की, आप जनाब की और तमाम ह़ाज़िरीने इजतिमाअ़ की मग़फ़िरत हो जाए, येह सुन कर आक़ा ने कहा ! तीन (3) बातें जो मेरे इख़्तियार में थीं, वोह कर ली हैं, चौथी सब की मग़फ़िरत वाली बात मेरे इख़्तियार से बाहर है। उसी रात आक़ा ने ख़्वाब में किसी कहने वाले को सुना : जो तुम्हारे इख़्तियार में था, वोह तुम ने कर दिया और मैं **अरह़मुर्राह़िमीन** हूं, मैं ने तुम्हें, तुम्हारे ग़ुलाम, मन्सूर को और तमाम ह़ाज़िरीन को बख़्श दिया।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, जि. 1 स. 114, بحوالہ روض الریاحین، ص۲۲۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने से कैसी कैसी बरकतें ह़ासिल होती हैं। उस ग़ुलाम ने सिर्फ़ चार (4) दिरहम सदक़ा किये, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे उस के आक़ा के ज़रीए इन चार (4) दिरहम के बदले में चार हज़ार (4000) दिरहम अ़त़ा किये और उसे ग़ुलामी से आज़ादी का परवाना भी मिल गया नीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस सदक़े की बरकत से ग़ुलाम और उस के आक़ा समेत कई लोगों की मग़फ़िरत भी फ़रमा दी। वाक़ेई जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में इख़्लास के साथ सदक़ा करता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को दुगना अज्र अ़त़ा फ़रमाता है, बल्कि उस से भी ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाता है, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि वक़्तन फ़ वक़्तन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ह़स्बे तौफ़ीक़ ज़रूर सदक़ा किया करें, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हमें इस की बे शुमार दीनी व दुन्यावी बरकतें ह़ासिल होंगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में सदक़ा व ख़ैरात करने की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि ख़ुद हमारे प्यारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में सदक़ा व ख़ैरात करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया और मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर सदक़ा व ख़ैरात करने वालों की ता'रीफ़ व तौसीफ़ भी फ़रमाई जैसा की सूरए बक़रह की इबतिदाई आयात में सदक़ा व ख़ैरात करने वालों को हिदायत का मुज़्दा सुनाया गया, चुनान्चे, फ़रमाने ख़ुदावन्दी है :

www.dawateislami.net

هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ (پ ۱، البقرة: ۲، ۳)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हिदायत है डर वालों को वोह जो बे देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ाइम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي आयते मुबारका के इस ह़िस्से : ﴿وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ﴾ के तह़्त फ़रमाते हैं : राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से या ज़कात मुराद है, जैसा कि दूसरी जगह फ़रमाया : ﴿يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ﴾ या मुत़लक़ इनफ़ाक़ (या'नी राहे ख़ुदा में मुत़लक़न ख़र्च करना मुराद है) ख़्वाह फ़र्ज़ व वाजिब हो जैसे ज़कात, नज़्र, अपना और अपने अहल का नफ़क़ा वग़ैरा ख़्वाह मुस्तह़ब जैसे सदक़ाते नाफ़िला और अम्वात का ईसाले सवाब। **मस्अला :** ग्यारहवीं, फ़ातिह़ा, तीजा, चालीसवां भी इस में दाख़िल हैं कि वोह सब सदक़ाते नाफ़िला हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 5)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बहुत ख़ुश नसीब हैं वोह मुसलमान जो अपने माल के हुक़ूक़े वाजिबा अदा करते हैं, ख़ुश दिली से बर वक़्त ज़कात व फ़ित्रा अदा करते हैं, अपने माल मां-बाप, बहन-भाई और अवलाद पर ख़र्च करते हैं, अपने अ़ज़ीज़ो अक़रिबा की मौत पर उन के ईसाले सवाब के लिये तीजा, दसवां, चालीसवां, बरसी वग़ैरा कर के मसाकीन को खाना खिलाते हैं, नेक निय्यती से शिफ़ाख़ाने बनवाते हैं, हुक़ूक़े आ़म्मा का लिह़ाज़ रखते हुवे इख़्लास के साथ क़ुरआन ख़्वानी, इजतिमाए ज़िक्रो ना'त और सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के इन-इ़क़ाद पर ख़र्च करते हैं, मसाजिद व मदारिस व जामिआ़त वग़ैरा की ता'मीर व तरक़्क़ी और रोज़ मर्रा के अख़राजात में ह़िस्सा लेते हैं, दीनी त़लबा व त़ालिबात पर अपना माल ख़र्च करते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपने फ़ज़्ल से दुगना बल्कि इस से भी ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाएगा, आइये, हम भी हाथों हाथ निय्यत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये न सिर्फ़ ख़ुद अपने मदनी अ़त़िय्यात दा'वते इस्लामी को देंगे, बल्कि दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएंगे। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

सदक़े की ता'रीफ़

आइये ज़िम्नन सदक़े की ता'रीफ़ भी सुन लेते हैं, चुनान्चे, सदक़े का मत़लब येह है कि कोई चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में दी जाए और इस के ज़रीए लोगों में अपनी वाह वाह कराना मक़्सूद न हो, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अज्रो सवाब ह़ासिल करने की निय्यत की जाए।

(کتاب التعریفات، باب الصاد، ص۹۴ ماخوذاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदक़े की बयान कर्दा ता'रीफ़ के ज़िम्न में येह भी मा'लूम हुवा कि ह़क़ीक़ी सदक़ा वोही है जिस से मक़्सूद रियाकारी, हुब्बे जाह और लोगों में अपनी वाह वाह न हो बल्कि वोह सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी और उस की त़रफ़ से मिलने वाले सवाब को ह़ासिल करने की ग़रज़ से दिया गया हो। यहां एक और बात भी क़ाबिले ग़ौर है और वोह येह कि बा'ज़ लोग शायद येह समझते हैं कि जो चीज़ नाकारा हो जाए या हमारे किसी काम की न रहे वोह चीज़ सदक़ा करनी चाहिये, ह़ालांकि ऐसा नहीं बल्कि इन्सान जो चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये सदक़ा कर रहा हो वोह कार आमद होने के साथ साथ उ़म्दा, बेहतरीन और मरग़ूब व पसन्दीदा भी होनी चाहिये जैसा कि कुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पारह 4, सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 92 में इरशाद फ़रमाया :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾ (پ۴، اٰلِ عمران:۹۲)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो और तुम जो कुछ ख़र्च करो **अल्लाह** को मा'लूम है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इब्ने

www.dawateislami.net

उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि यहां ख़र्च करना आ़म है, तमाम सदक़ात का या'नी वाजिबा हों या नाफ़िला सब इस में दाख़िल हैं, ह़सन का क़ौल है कि जो माल मुसलमानों को मह़बूब हो और उसे रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करे, वोह इस आयत में दाख़िल है ख़्वाह एक खजूर ही हो।

(ह़ज़रते सय्यिदुना) उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) शकर की बोरियां ख़रीद कर सदक़ा करते थे, उन से कहा गया : इस की क़ीमत ही क्यूं नहीं सदक़ा कर देते ? फ़रमाया : शकर मुझे मह़बूब व मरग़ूब है, येह चाहता हूं कि राहे ख़ुदा में प्यारी चीज़ ख़र्च करूं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपना मह़बूब तरीन माल ख़र्च करने की तरग़ीब इरशाद फ़रमा रहा है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि कन्जूसी से काम लेने के बजाए, अच्छी अच्छी निय्यतों और इख़्लास के साथ दिल खोल कर सदक़ा व ख़ैरात किया करें। ज़ाहिर है कि हमारे पास जो कुछ भी है, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का दिया हुवा है, लिहाज़ा उसी के दिये हुवे माल में से उसी की रिज़ा के लिये सदक़ा करना यक़ीनन ने'मतों में मज़ीद इज़ाफ़े का बाइ़स होगा, जब कि इस के बर अ़क्स क़ुदरत के बा वुजूद सदक़ा व ख़ैरात से हाथ रोक लेना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाली ने'मतों से मह़रूमी का सबब भी बन सकता है। चुनान्चे,

ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, वोह फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : हाथ न रोको वरना तुम से भी रोक लिया जाएगा। (بخاری،کتاب الزکوۃ،باب التحریض علی الصدقۃ، ۱/۴۸۳،حدیث:۱۴۳۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से हाथ रोकना, सदक़ा व ख़ैरात में कन्जूसी करना, गिन गिन कर माल जम्अ़ करना और ह़ाजत मन्दों की त़रफ़ से मुंह फेर लेना, बहुत मह़रूमी की बात है, क्यूंकि राहे ख़ुदा में ख़र्च करना और सदक़ा व ख़ैरात करना तो सआ़दत का काम है,

www.dawateislami.net

अगर हम नहीं करेंगे तो येह नेक काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी और से ले लेगा । याद रखिये ! जिस त़रह़ राहे ख़ुदा में ख़र्च करना, इन्सान की अपनी ज़ात के लिये मुफ़ीद है, इसी त़रह़ बुख़्ल से काम लेना भी उस की अपनी ही ज़ात के लिये ख़सारे (या'नी नुक़्सान) का बाइ़स है । नेकी के कामों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने सख़ी बन्दों को चुन लेता है, जो दिल खोल कर राहे ख़ुदा में ख़र्च करते हैं और ख़ूब ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात करते, मगर इस के बा वुजूद उन के माल में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर दिन दुगनी रात चौगुनी तरक़्क़ी व बरकत ही होती चली जाती है । जब कि कन्जूस का ह़ाल येह होता है कि कसीर मालो दौलत के बा वुजूद उसे अपना माल कम लगता है जिस की वजह से वोह सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला की अदाएगी करने, नेकी के कामों में ख़र्च करने और मख़्लूक़े ख़ुदा की मदद करने से ज़िन्दगी भर कतराता रहता है कि कहीं मेरे माल में कमी वाक़ेअ़ न हो जाए । बिल आख़िर एक दिन मौत का फ़िरिश्ता उस के पास आ जाता है और उस की मौत के बा'द उस का सारा माल उस के वुरसा के पास चला जाता है । आइये इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 410 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **'उ़यूनुल ह़िकायात'** (ह़िस्सए अव्वल) के सफ़ह़ा 74 से कन्जूसी के अन्जाम के बारे में एक इ़ब्रतनाक ह़िकायत सुनते हैं । चुनान्चे,

कन्जूसी का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन मय-सरह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम से पहली उम्मतों में एक शख़्स था जिस ने बहुत ज़ियादा मालो मताअ़ जम्अ़ किया हुवा था, और उस की अवलाद भी काफ़ी थी, त़रह़ त़रह़ की ने'मतें उसे मुयस्सर थीं, कसीर माल होने के बा वुजूद वोह इन्तिहाई कन्जूस था । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कुछ भी ख़र्च न करता, हर वक़्त इसी कोशिश में रहता कि किसी त़रह़ मेरी दौलत में इज़ाफ़ा हो जाए । जब वोह बहुत ज़ियादा माल जम्अ़ कर चुका तो अपने आप से कहने लगा : अब तो मैं ख़ूब ऐ़शो इ़शरत की ज़िन्दगी गुज़ारूंगा । चुनान्चे, वोह अपने अहलो इ़याल के साथ ख़ूब ऐ़शो इ़शरत से रहने लगा ।

www.dawateislami.net

बहुत से ख़ुद्दाम हर वक़्त हाथ बान्धे उस के हुक्म के मुन्तज़िर रहते, अल ग़रज़ ! वोह दुन्यावी आसाइशों में ऐसा मगन हुवा कि अपनी मौत को बिल्कुल भूल गया । एक दिन मलकुल मौत ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام एक फ़क़ीर की सूरत में उस के घर आए और दरवाज़ा खट-खटाया । ग़ुलाम फ़ौरन दरवाज़े की त़रफ़ दौड़े और जैसे ही दरवाज़ा खोला तो सामने एक फ़क़ीर को पाया, उस से पूछा : तू यहां किस लिये आया है ? मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब दिया : जाओ, अपने मालिक को बाहर भेजो, मुझे उसी से काम है ।

ख़ादिमों ने झूट बोलते हुवे कहा : वोह तो तेरे ही जैसे किसी फ़क़ीर की मदद करने बाहर गए हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कुछ देर बा'द दोबारा दरवाज़ा खट-खटाया, ग़ुलाम बाहर आए तो उन से कहा : जाओ ! और अपने आक़ा से कहो : मैं मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام हूं ।

जब उस मालदार शख़्स ने येह बात सुनी तो बहुत ख़ौफ़ज़दा हुवा और अपने ग़ुलाम से कहा : जाओ ! और उन से बहुत नर्मी से गुफ़्तगू करो । ख़ुद्दाम बाहर आए और ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे : आप हमारे आक़ा के बदले किसी और की रूह़ क़ब्ज़ कर लें और उसे छोड़ दें, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को बरकतें अ़त़ा फ़रमाए । ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता । फिर मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام अन्दर तशरीफ़ ले गए और उस मालदार शख़्स से कहा : तुझे जो वसिय्यत करनी है कर ले, मैं तेरी रूह़ क़ब्ज़ किये बिग़ैर यहां से नहीं जाऊंगा ।

येह सुन कर सब घर वाले चीख़ उठे और रोना धोना शुरूअ़ कर दिया, उस शख़्स ने अपने घर वालों और ग़ुलामों से कहा : सोने चांदी से भरे हुवे सन्दूक़ और ताबूत खोल दो और मेरी तमाम दौलत मेरे सामने ले आओ । फ़ौरन हुक्म की ता'मील हुई और सारा ख़ज़ाना उस के क़दमों में ढेर कर दिया गया । वोह शख़्स सोने चांदी के ढेर के पास आया और कहने लगा : ऐ ज़लील व बदतरीन माल ! तुझ पर ला'नत हो, तू ने ही मुझे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रखा, तू ने ही मुझे आख़िरत की तय्यारी से रोके रखा ।

www.dawateislami.net

येह सुन कर वोह माल उस से कहने लगा : तू मुझे मलामत न कर, क्या तू वोही नहीं कि दुन्यादारों की नज़रों में ह़क़ीर था ? मैं ने तेरी इ़ज़्ज़त बढ़ाई । मेरी ही वजह से तेरी रसाई बादशाहों के दरबार तक हुई वरना ग़रीब व नेक लोग तो वहां तक पहुंच ही नहीं सकते, मेरी ही वजह से तेरा निकाह़ शहज़ादियों और अमीर ज़ादियों से हुवा । वरना ग़रीब लोग उन से कहां शादी कर सकते हैं । अब येह तो तेरी बद बख़्ती है कि तूने मुझे शैत़ानी कामों में ख़र्च किया । अगर तू मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कामों में ख़र्च करता तो येह ज़िल्लतो रुस्वाई तेरा मुक़द्दर न बनती । क्या मैं ने तुझ से कहा था कि तू मुझे नेक कामों में ख़र्च न कर ? आज के दिन मैं नहीं बल्कि तू ज़ियादा मलामत व ला'नत का मुस्तह़िक़ है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी को ग़नीमत जानिये ! यक़ीनन येह ज़िन्दगी जहां एक बेहतरीन ने'मत है वहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हमारे लिये नेकियां कमाने और आख़िरत बनाने की ज़बरदस्त मोहलत भी है लिहाज़ा जितनी सांसें बाक़ी बची हैं, इन में जल्दी जल्दी नेकियां कमाइये, ख़ूब ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात कर लीजिये वरना पैग़ामे अजल आने के बा'द येह मोहलत ख़त्म हो जाएगी और फिर चाहने के बावुजूद भी मौक़अ़ नहीं मिलेगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 28 सूरतुल मुनाफ़िक़ून की आयत नम्बर 10 और 11 में इरशाद फ़रमाता है :

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَاؕ (پ۲۸،المنافقون:۱۰،۱۱)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब ! तू ने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता और हरगिज़ **अल्लाह** किसी जान को मोहलत न देगा जब उस का वा'दा आ जाए ।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि इन्सान का अपना माल जो दर ह़क़ीक़त उसे आख़िरत में काम आएगा, उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी दिलाएगा और नारे दोज़ख़ से बचाएगा वोह वोही है जो उस ने सदक़ा व ख़ैरात के त़ौर पर नेक कामों में ख़र्च कर दिया। अलबत्ता वोह माल जो उस के पास मौजूद है और वोह उसे अपना ही माल समझता है वोह तो उस का है ही नहीं, ह़क़ीक़त में तो वोह माल उस के वारिसों का है। जैसा कि

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन सुवैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, माहे नबुव्वत, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : اَیُّکُمْ مَالُ وَارِثِہٖ اَحَبُّ اِلَیْہِ مِنْ مَالِہٖ तुम में से किस को अपने माल से ज़ियादा वारिस का माल पसन्द है ? सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ कि : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : مَا مِنَّا اَحَدٌ اِلَّا مَالُہٗ اَحَبُّ اِلَیْہِ हम में से हर शख़्स को अपना ही माल ज़ियादा प्यारा है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : فَاِنَّ مَالَہٗ مَا قَدَّمَ وَمَالَ وَارِثِہٖ مَا اَخَّرَ इन्सान का अपना माल तो वोह है जो उस ने आगे भेज दिया (या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिया) और जो उस ने पीछे छोड़ दिया (दुन्या में) वोह उस के वारिस का माल है। (صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب ماقدم من ماله فهوله، الحدیث: ۶۴۴۲، ص ۵۳۱)

अह़ादीसे मुबारका में सदक़े के बे शुमार फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, आइये इस ज़िम्न में 8 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

सदक़े की फ़ज़ीलत पर 8 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1. اَلصَّدَقَۃُ تَسُدُّ سَبْعِیْنَ بَابًا مِّنَ السُّوْءِ सदक़ा बुराई के 70 दरवाज़े बन्द करता है।

(المعجم الکبیر، ۴/۲۷۴، حدیث: ۴۴۰۲)

2. کُلُّ امْرِیٍٔ فِیْ ظِلِّ صَدَقَتِہٖ حَتّٰی یُقْضٰی بَیْنَ النَّاسِ हर शख़्स (ब रोज़े क़ियामत) अपने सदक़े के साए में होगा यहां तक कि लोगों के दरमियान फ़ैसला फ़रमा दिया जाए।

(المعجم الکبیر، ۱۷/ ۲۸۰، حدیث: ۷۷۱)

www.dawateislami.net

3. اِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ عَنْ اَهْلِهَا حَرَّ الْقُبُوْرِ وَ اِنَّمَا يَسْتَظِلُّ الْمُؤْمِنُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيْ ظِلِّ صَدَقَتِهٖ बेशक सदक़ा करने वालों को सदक़ा क़ब्र की गर्मी से बचाता है और बिला शुबा मुसलमान क़ियामत के दिन अपने सदक़े के साए में होगा।

(شُعَبُ الایمان، باب الزکاۃ، التحریض علی صدقۃ التطوع، ۳/۲۱۲، حدیث: ۳۳۴۷)

4. اَلصَّلٰوةُ بُرْهَانٌ وَ الصَّوْمُ جُنَّةٌ وَ الصَّدَقَةُ تُطْفِئُ الْخَطِيْئَةَ كَمَا يُطْفِئُ الْمَاءُ النَّارَ नमाज़ (ईमान की) दलील है और रोज़ा (गुनाहों से) ढाल है और सदक़ा ख़ताओं को यूं मिटा देता है जैसे पानी आग को। (ترمذی، ابواب السفر، باب ماذُکر فی فضل الصلاۃ، ۲/۱۱۸، حدیث: ۶۱۴)

5. بَاكِرُوْا بِالصَّدَقَةِ فَاِنَّ الْبَلَاءَ لَا يَتَخَطَّى الصَّدَقَةَ सुब्ह सवेरे सदक़ा दिया करो क्यूंकि बला सदक़े से आगे क़दम नहीं बढ़ाती। (شُعَبُ الایمان، باب فی الزکاۃ، التحریض علی صدقۃ التطوع، ۳/۲۱۴، حدیث: ۳۳۵۳)

6. اِنَّ صَدَقَةَ الْمُسْلِمِ تَزِيْدُ فِي الْعُمُرِ وَ تَمْنَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ وَ يُذْهِبُ اللّٰهُ الْكِبْرَ وَ الْفَخْرَ बेशक मुसलमान का सदक़ा उम्र बढ़ाता और बुरी मौत को रोकता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से सदक़ा देने वाले से तकब्बुर व तफ़ाख़ुर (बड़ाई और फ़ख़्र करने की बुरी आदत) दूर कर देता है। (المعجم الکبیر، ۱۷/۲۲، حدیث: ۳۱)

7. اِنَّهَا حِجَابٌ مِّنَ النَّارِ لِمَنِ احْتَسَبَهَا يَبْتَغِيْ بِهَا وَجْهَ اللّٰهِ जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर सदक़ा करे तो वोह (सदक़ा) उस के और आग के दरमियान पर्दा बन जाता है। (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، ۳/۲۸۶، حدیث: ۴۶۱۷)

8. اِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ وَ تَدْفَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ बेशक सदक़ा रब عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दफ़्अ करता है। (ترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ما جاء فی فضل الصدقۃ، ۲/۱۴۶، حدیث: ۶۶۴)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आख़िरी हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : ख़ैरात करने वाले सख़ी की ज़िन्दगी भी अच्छी होती है कि अव्वलन तो उस पर दुन्यवी मुसीबतें आती नहीं और अगर इमतिहानन आ भी जाएं तो रब तआला की तरफ़ से उसे सुकूने क़ल्बी नसीब होता है जिस से वोह सब्र कर के सवाब कमा लेता है, ग़रज़ कि उस के लिये मुसीबत, मा'सियत (गुनाह) ले कर नहीं आती, मग़फ़िरत ले कर आती है, बुरी मौत से मुराद ख़राबिये ख़ातिमा है या ग़फ़्लत की अचानक मौत

www.dawateislami.net

या मौत के वक़्त ऐसी अ़लामत का ज़ुहूर है जो बा'दे मौत बदनामी का बाइ़स हो और ऐसी सख़्त बीमारी है जो मय्यित के दिल में घबराहट पैदा कर के ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल कर दे, ग़रज़ कि सख़ी बन्दा इन तमाम बुराइयों से महफ़ूज़ रहेगा। (मिरआतुल मनाजीह शर्हे मिश्कातुल मसाबीह, जि. 3, स. 103)

ह़ज़रते अबू कब्शा अन्मारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि उन्हों ने नबिय्ये मुकर्रम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि तीन (3) बातें वोह हैं जिन पर मैं क़सम खाता हूं और एक बात की तुम्हें ख़बर देता हूं उसे याद रखो, फ़रमाया कि : किसी बन्दे का माल सदक़ा करने से कम नहीं होता और कोई ज़ुल्म नहीं किया जाता जिस पर वोह सब्र करे, मगर **अल्लाह** तआ़ला उस की इ़ज़्ज़त बढ़ाता है और कोई (अपने लिये) मांगने का दरवाज़ा नहीं खोलता, मगर **अल्लाह** तआ़ला उस पर फ़क़ीरी का दरवाज़ा खोल देता है और तुम्हें एक और बात बता रहा हूं उसे याद रखो, फ़रमाया : दुन्या चार (4) क़िस्म के बन्दों की है। (1) वोह बन्दा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल और इ़ल्म दिया तो वोह उस में **अल्लाह** तआ़ला से डरता (और नेक आ'माल करता) है, सिलए रेह़मी (रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) करता है और उस में **अल्लाह** तआ़ला का ह़क़ पहचानता है (सदक़ा व ज़कात अदा करता है) येह शख़्स बेहतरीन दरजे में है। (2) वोह बन्दा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इ़ल्म दिया और माल नहीं दिया वोह ख़ुलूसे निय्यत के साथ कहता है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं फ़ुलां (पहले शख़्स) की त़रह़ अ़मल करता, उसे उस की निय्यत का बदला मिलेगा और इन दोनों (पहले और दूसरे) का सवाब बराबर है। (3) वोह बन्दा जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने माल दिया और इ़ल्म न दिया तो वोह अपने माल में बिग़ैर सोचे समझे तसर्रुफ़ (ख़र्च वग़ैरा) करता है, इस में अपने रब عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता, सिलए रेह़मी (रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) नहीं करता और न ही इस में ह़ुक़ूक़ुल्लाह को पहचानता है (सदक़ा व ज़कात अदा नहीं करता) येह शख़्स बद तरीन दरजे में है।

www.dawateislami.net

(4) वोह बन्दा जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने न माल दिया और न इ़ल्म येह कहता है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं फ़ुलां (तीसरे शख़्स) की त़रह़ तसर्रुफ़ करता, उसे उस की निय्यत का बदला मिलेगा और इन दोनों (तीसरे और चौथे शख़्स) का गुनाह बराबर है।

(मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 99)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि वोह लोग जो अपने माल में से कुछ हिस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ख़र्च करते हैं, इसी त़रह़ वोह लोग जो तंगदस्ती की वजह से माल तो ख़र्च नहीं कर सकते, मगर उन की येह तमन्ना होती है कि अगर हमारे पास माल आया तो हम भी राहे ख़ुदा में ख़र्च करेंगे, तो ऐसे ख़ुश नसीबों के बारे में ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया कि वोह बेहतरीन दरजे में होंगे। ऐ काश ! हम भी उन ख़ुश नसीबों में शामिल हो जाएं और अपने अस्लाफ़ व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे ज़ौक़ो शौक़ के साथ सदक़ा व ख़ैरात करने वाले बन जाएं। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين के अन्दर सदक़े का ऐसा जज़्बा हुवा करता था कि अगर उन के पास कोई सुवाली आता तो वोह नुफ़ूसे कुदसिय्या हरगिज़ हरगिज़ उसे तहीदस्त (ख़ाली हाथ) न लौटाते, अगर्चे उसे देने के बा'द अपने लिये कुछ भी न बचे, या'नी उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इस क़दर कामिल यक़ीन होता था कि न सिर्फ़ इज़ाफ़ी अश्या बल्कि अपनी ज़रूरत की चीज़ें भी सदक़ा कर दिया करते थे। आइये इस ज़िम्न में चन्द वाक़िआ़त सुनते हैं :

जन्नत में घर की ज़मानत

एक शख़्स ख़ुरासान से बसरा आया और उस ने मश्हूर वलिय्युल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास दस हज़ार (10,000) दिरहम बत़ौरे अमानत रखे और कहा कि आप मेरे लिये बसरा में एक घर ख़रीदें ताकि जब मैं मक्का से वापस आऊं तो उस घर में रहूं (येह कह कर

www.dawateislami.net

वोह चला गया) । इसी दौरान लोगों को आटे की महंगाई का सामना करना पड़ा तो ह़ज़रते ह़बीब अ़जमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन दिरहमों से आटा ख़रीद कर सदक़ा कर दिया, उन से कहा गया कि उस शख़्स ने तो आप से घर ख़रीदने के लिये कहा था ! फ़रमाया : मैं ने उस के लिये जन्नत में घर ले लिया है ! अगर वोह इस पर राज़ी होगा तो ठीक, वरना मैं उसे दस हज़ार (10,000) दिरहम वापस दे दूंगा । फिर जब वोह लौटा तो पूछा : ऐ अबू मुह़म्मद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (येह ह़ज़रते ह़बीब अ़जमी की कुन्यत थी) क्या आप ने घर ख़रीद लिया ? जवाब दिया : हां ! मह़ल्लात, नह्रों और दरख़्तों के साथ, तो वोह शख़्स बहुत ख़ुश हुवा फिर कहने लगा : मैं उस में रहना चाहता हूं, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने वोह घर **अल्लाह** तआ़ला से जन्नत में ख़रीदा है ! येह सुन कर उस शख़्स की ख़ुशी मज़ीद बढ़ गई, उस की बीवी बोली : उन से कहो कि अपनी ज़मानत की एक दस्तावेज़ लिख दें, तो ह़ज़रते ह़बीब अ़जमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने लिखा : ''بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم **जो घर ह़बीब अ़जमी ने मह़ल्लात, नह्रों और दरख़्तों समेत दस हज़ार (10,000) दिरहम में अल्लाह तआ़ला से फ़ुलां बिन फ़ुलां के लिये जन्नत में ख़रीदा है, येह उस की दस्तावेज़ है । अब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह ह़बीब अ़जमी की ज़मानत को पूरा फ़रमा दे ।**'' कुछ अ़र्से बा'द उस शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया । उस ने येह वसिय्यत की थी कि मेरे कफ़न में येह रुक़्आ़ डाल देना । (तदफ़ीन के बा'द) जब सुब्ह़ हुई तो लोगों ने देखा कि उस शख़्स की क़ब्र पर एक रुक़्आ़ है जिस में लिखा था कि येह ह़बीब अ़जमी के लिये उस मकान से बराअत नामा है जो उन्हों ने फ़ुलां शख़्स के लिये ख़रीदा था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स को वोह मकान अ़ता फ़रमा दिया । उस मक्तूब को ह़बीब अ़जमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ले लिया और बहुत रोए और फ़रमाया : येह **अल्लाह** तआ़ला की जानिब से मेरे लिये बराअत नामा है ।

(نزهة المجالس، باب في فضل الصدقة...الخ، ج ۲، ص ٦)

www.dawateislami.net

याद रहे कि बयान कर्दा ह़िकायत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का अमानत को इस्ति'माल कर लेना और दूसरे लोगों पर सदक़ा कर देना, औलियाउल्लाह के ख़ास ह़ालात व तसर्रुफ़ात के वाक़िआ़त में से एक वाक़िआ़ है, वरना हर एक को शरअ़न इस बात की इजाज़त नहीं कि किसी की अमानत को अपने इस्ति'माल में ले आए या उसे दूसरे लोगों पर ख़र्च कर दे।

बे मिसाल तवक्कुल और ला जवाब सदक़ा

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि एक मिस्कीन ने आप से सुवाल किया, जब कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोज़े से थीं और घर में सिवाए एक रोटी के कुछ न था। आप ने अपनी बांदी से फ़रमाया : इसे वोह रोटी दे दो, तो बांदी ने कहा : आप की इफ़्त़ारी के लिये इस के सिवा कुछ नहीं, सय्यिदा आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : इसे वोह रोटी दे दो, बांदी कहती हैं, मैं ने वोह रोटी उसे दे दी, अभी शाम नहीं हुई थी कि अहले बैत ने या किसी और शख़्स ने जो हदिय्या दिया करता था, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बत़ौरे हदिय्या एक बकरी भिजवाई, लाने वाला उस गोश्त को कपड़े में ढांपे हुवे ले कर आया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़ादिमा को बुला कर फ़रमाया : लो इस में से खाओ, येह तुम्हारी उस रोटी से बेहतर है।

(شُعَبُ الإیمان، باب في الزکاۃ، فصل فیما جاء فی الإیثار، الحدیث: ۳۴۸۲، ج۳، ص۲۶۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह था अल्लाह वालों का त़र्ज़े अ़मल कि जो कुछ भी होता, सदक़ा कर देते येही वजह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के तवक्कुल के सबब इन्हें बेहतर से बेहतर बदला अ़त़ा फ़रमाता है। जैसा कि

अपने दौर के अब्दाल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र बिन ख़त़्त़ाब رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे दरवाज़े पर एक साइल (मांगने वाले) ने सदा लगाई, मैं ने ज़ौजए मोह़तरमा से पूछा : तुम्हारे पास कुछ है ? जवाब मिला :

www.dawateislami.net

चार (4) अन्डे हैं । मैं ने कहा : साइल को दे दो । इन्हों ने ता'मील की । साइल अन्डे पा कर चला गया । अभी थोड़ी देर गुज़री थी कि मेरे पास एक दोस्त ने अन्डों से भरी हुई टोकरी भेजी । मैं ने घर में पूछा : इस में कुल कितने अन्डे हैं ? उन्हों ने कहा : तीस (30) । मैं ने कहा : तुम ने तो फ़क़ीर को चार (4) अन्डे दिये थे, येह तीस (30) किस हिसाब से आए ? कहने लगीं : तीस (30) अन्डे सालिम हैं और दस (10) टूटे हुवे ।

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ल्लामा याफ़ेई यमनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : बा'ज़ हज़रात इस हिकायत के मुतअ़ल्लिक़ येह बयान करते हैं कि साइल को जो अन्डे दिये गए थे उन में तीन (3) सालिम और एक टूटा हुवा था । रब तआ़ला ने हर एक के बदले दस-दस (10-10) अ़ता फ़रमाए । सालिम के इ़वज़ सालिम और टूटे हुवे के बदले टूटे हुवे ।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब आदाबे त़आ़म, जि. 1, स. 513 بحوالہ روض الریاحین، ص۱۵۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين न सिर्फ़ ख़ुद ब कसरत सदक़ा व ख़ैरात किया करते थे बल्कि दूसरे लोगों को भी इस कारे ख़ैर की बहुत तरग़ीब दिलाया करते थे, आइये इस ज़िम्न में 3 अक़्वाल सुनते हैं :

﴾1﴿ हर हाल में सदक़ा करो

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : अगर तुम्हारे पास दुन्या की दौलत आए तो उस में से कुछ ख़र्च करो, क्यूंकि ख़र्च करने से वोह ख़त्म नहीं हो जाएगी और अगर दुन्या की दौलत तुम से मुंह फेर कर जाने लगे तो भी उस में से कुछ ख़र्च करो, क्यूंकि उस ने बाक़ी नहीं रहना । (احیاء العلوم، ج۳ص۷۳۸)

www.dawateislami.net

﴾2﴿ सख़ावत क्या है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से पूछा गया कि सख़ावत क्या है ? फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अपना माल ख़ूब ख़र्च करना । फिर पूछा : ह़ज़्म (एह़तियात़) क्या है ? फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये माल रोके रखना । फिर पूछा गया : इस्राफ़ क्या है ? फ़रमाया : इक़्तिदार की चाहत में माल ख़र्च करना । (احیاء العلوم، ج۳ص۷۳۹)

﴾3﴿ जूदो करम ईमान में से है

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : दीन के गुनाहगार और ज़िन्दगी में लाचार व बद ह़ाल बहुत से लोग सिर्फ़ अपनी सख़ावत की वजह से जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे । (احیاء العلوم، ج۳ص۷۴۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

माली इबादत की क़बूलिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़कात और सदक़ा व ख़ैरात का शुमार माली इबादत में होता है और इस इबादत की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मालदारों को दी है, ताकि ग़रीब व मिस्कीन लोगों की ह़ाजत पूरी होने के साथ साथ दौलत किसी एक जगह जम्अ़ न हो, बल्कि पूरे मुआ़शरे में गरदिश करती रहे । नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दौलत को ग़रीबों और मिस्कीनों पर ख़र्च करने को अपनी रिज़ा का ज़रीआ़ भी क़रार दिया है, लिहाज़ा अगर कोई शख़्स किसी ग़रीब व मिस्कीन शख़्स की माली मदद कर के उस पर एह़सान करे तो इसे अपनी सआ़दत मन्दी समझे और हरगिज़ हरगिज़ उस ग़रीब पर एह़सान जतला कर उसे शर्मिन्दा व रुस्वा न करे । याद रखिये ! सवाब उसी सदक़े का मिलता है जिस के बा'द एह़सान न जताया जाए । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी राह में ख़र्च करने वालों के मुतअ़ल्लिक़ पारह 3, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 262 और 263 में इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًىۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ(۲۶۲) قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّ مَغْفِرَةٌ خَیْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ یَّتْبَعُهَاۤ اَذًىؕ (پ۳، البقرۃ: ۲۶۲، ۲۶۳)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें, उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म, अच्छी बात कहना और दरगुज़र करना उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बा'द सताना हो ।

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه तफ़्सीरे ख़ाज़िन में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं कि एह़सान रखने से मुराद किसी को कुछ देने के बा'द दूसरों के सामने येह इज़्हार करना है कि मैं ने इतना कुछ तुझे दिया और तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये । पस इस त़रह़ किसी को मुकद्दर (या'नी रन्जीदा व ग़मगीन) करना, एह़सान जताना कहलाता है और किसी को तक्लीफ़ देने से मुराद, उस को आ़र दिलाना है, मसलन येह कहा जाए कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मजबूर था, निकम्मा था वग़ैरा मैं ने तेरी ख़बर गिरी की । मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर साइल को कुछ न दिया जाए तो उस से अच्छी बात कहना और ख़ुश ख़ुल्क़ी के साथ ऐसा जवाब देना जो उस को ना गवार न गुज़रे और अगर वोह सुवाल में इस्रार करे या ज़बान दराज़ी करे तो उस से दरगुज़र करना (उस सदक़े से बेहतर है जिस के बा'द सताया और एह़सान जताया जाए) । (تفسیر خازن، پ۳، البقرۃ، ۱/۲۰۶)

एह़तिरामे मुस्लिम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये ! इस्लाम ने एह़तिरामे मुस्लिम का किस क़दर लिह़ाज़ रखा है कि कोई भी शख़्स अपने मुसलमान भाई की माली इमदाद करने के बा'द एह़सान जता कर या त़ा'ना दे कर उस को तक्लीफ़ न दे, बल्कि उस की इ़ज़्ज़ते नफ़्स का एह़तिराम करे, क्यूंकि सदक़ा व ख़ैरात देने से किसी को येह ह़क़ ह़ासिल नहीं हो जाता कि जब चाहे एह़सान याद दिला कर ग़रीब की इ़ज़्ज़त की धज्जियां बिखेरने लगे । ऐसे

www.dawateislami.net

सदक़े से तो बेहतर था कि वोह उसे कुछ देता ही ना बल्कि उस से कोई अच्छी बात कह देता, मा'ज़िरत कर लेता या किसी और शख़्स के पास भेज देता। यहां उन लोगों के लिये दर्से हिदायत है जो पहले जोश में आ कर ज़रूरत मन्दों की इमदाद कर देते हैं मगर बा'द में अपने त़ा'नों के तीरों से उन के सीने छलनी कर देते हैं। किसी बात पर ज़रा गुस्सा क्या आया फ़ौरन अपने एह़सानात की लम्बी फ़ेहरिस्त सुनाना शुरूअ़ कर देते हैं। मसलन कहा जाता है कल तक तो वोह फ़क़ीर था, भीक मांगता फिरता था मेरा दिया हुवा खाता था और आज मुझे ही आंखें दिखाता है। जब उस की मां हस्पताल में एड़ियां रगड़ रही थी तो मैं ने मदद की थी। उस की बेटी की शादी मैं ने करवाई, सारे एह़सानात भूल गया नमक ह़राम कहीं का वग़ैरा वग़ैरा। याद रखिये ! इस त़रह़ की बातों में ख़सारा ही ख़सारा है क्यूंकि माल तो आप दे ही चुके, अब त़ा'ने दे कर और एह़सान जता कर सवाब ज़ाएअ़ मत कीजिये। पारह 3, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 264 में इरशादे ख़ुदावन्दी है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰىۙ (پ۳،البقرة:۲۶۴)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपने सदक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर।

तफ़्सीरे मदारिक में ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल बरकात अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الصَّمَد इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ मुनाफ़िक़ को रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं होती और वोह अपना माल रियाकारी के लिये ख़र्च कर के ज़ाएअ़ कर देता है, इस त़रह़ तुम एह़सान जता कर और ईज़ा दे कर अपने सदक़ात का अज्र ज़ाएअ़ न करो।

(تفسیر مدارک، پ۳، البقرة، تحت الآیة: ۲۶۴، ص۱۳۷)

तीन ﴿3﴾ ज़रूरी बातें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि सदक़ा देते हुवे तीन (3) बातें पेशे नज़र रखना बहुत ज़रूरी हैं : (1) सदक़ा दे कर एह़सान न जताए (2) जिसे सदक़ा दे उस के दिल को त़ा'नों के तीरों से ज़ख़्मी न करे (3) सदक़ा इख़्लास के साथ और रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल के लिये दे।

www.dawateislami.net

मुसलमानों को त़ा'ने दे कर एह़सान जता कर दिल आज़ारियां करने वालों और रियाकारी की आफ़त में मुब्तला होने वालों के लिये मक़ामे ग़ौर है, लिहाज़ा इन्हें चाहिये कि जब भी सदक़ा व ख़ैरात की सआ़दत ह़ासिल हो तो मज़्कूरा तीनों बातों को पेशे नज़र रखें, कहीं ऐसा न हो कि कल बरोज़े क़ियामत इन का शुमार भी उन मुफ़्लिसों में हो जो ढेरों नेकियां ले कर आएंगे मगर तहीदस्त (ख़ाली हाथ) रह जाएंगे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदक़ा व ख़ैरात करते हुवे इस बात का भी ख़ास ख़याल रखना चाहिये कि किस को सदक़ा दिया जाए और किस को नहीं, बद क़िस्मती से आज कल मुआ़शरे में मुस्तह़िक़ीन और ह़ाजत मन्द फ़ुक़रा को ढूंडना बहुत मुश्किल हो गया है, क्यूंकि बहुत से ऐसे अफ़राद भी देखे जाते हैं जो बिल्कुल सिह़्ह़त मन्द और तन्दुरुस्त होते हैं, मगर अपने आप को ग़रीब व नादार और ज़रूरत मन्द कह कर दस्ते सुवाल दराज़ करते हुवे ज़रा नहीं शर्माते। लिहाज़ा इस मुआ़मले में बहुत एह़तियात़ की ह़ाजत है कि जो वाक़ेई सफ़ेद पोश ह़ाजत मन्द हो या कमाने पर क़ुदरत न रखता हो, ऐसों को ही दिया जाए, पेशावर भिकारियों को हरगिज़ हरगिज़ न दिया जाए वरना कहीं ऐसा न हो कि सवाब के बजाए हमारे नामए आ'माल में गुनाह लिख दिया जाए। जैसा कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के फ़रमान का ख़ुलासा है : जिन को सुवाल करना ह़लाल नहीं, ऐसों के सुवाल पर उन का ह़ाल जान कर उन्हें कुछ देना कोई कारे सवाब नहीं बल्कि ना जाइज़ व गुनाह और गुनाह में मदद करना है।

(मुलख़्ख़सन फ़तावा रज़विय्या, मुख़र्रजा जि. 10 स. 303)

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : जो शख़्स लोगों से सुवाल करे, ह़ालांकि न उसे फ़ाक़ा पहुंचा, न इतने बाल बच्चे हैं, जिन की त़ाक़त नहीं रखता तो क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस के मुंह पर गोश्त न होगा। (شُعَبُ الْاِیْمَان لِلْبَیْہَقِیّ ج3 ص274 حدیث3526)

www.dawateislami.net

बहर ह़ाल ज़कात सदक़ा व ख़ैरात देने से पहले ख़ूब ख़ूब ग़ौर कर लेना चाहिये और क्या ही अच्छा हो कि ग़रीबों, मिस्कीनों, यतीमों, बेवाओं, ह़ाजत मन्दों और रिश्तेदारों के साथ साथ हम अपने सदक़ात व मदनी अ़त़िय्यात नेकी के कामों, मसाजिदो मदारिस की ता'मीर व तरक़्क़ी नीज़ दीने इस्लाम की सरबुलन्दी और इल्मे दीन के फ़रोग़ की ख़ात़िर इल्मे दीन ह़ासिल करने वाले त़लबा व त़ालिबात के लिये दा'वते इस्लामी को दे कर अपनी आख़िरत का सामान करें। याद रहे कि आ़म ह़ाजत मन्दों के मुक़ाबले में दीन की ख़ात़िर अपने घर बार छोड़ कर मदारिस में क़ियाम पज़ीर ज़रूरत मन्द त़लबा की ज़रूरियात पूरी करना और उन की माली ख़िदमत करना ज़ियादा बेहतर है। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 415 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब 'ज़ियाए सदक़ात' के सफ़ह़ा 172 पर है : इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْوَالِي नक़्ल करते हैं कि एक आ़लिम का मा'मूल था कि वोह सदक़ा देने में सूफ़ी फ़ुक़रा को तरजीह़ देते। उन से अ़र्ज़ की गई कि आप अगर आ़म फ़ुक़रा को सदक़ा दें तो क्या वोह अफ़्ज़ल नहीं ? जवाब दिया : येह नेक लोग हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्रो फ़िक्र में रहते हैं, अगर उन पर फ़ाक़ा या कोई मुसीबत आए तो उन के मशाग़िल में ख़लल आएगा, लिहाज़ा मेरे नज़दीक दुन्या के हज़ार त़लबगारों को देने से बेहतर है कि एक सच्चे दीनदार को दूं।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को येह बात बताई गई तो आप ने इसे पसन्द फ़रमाया और फ़रमाया कि येह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों में से है, मैं ने आज तक इतनी अच्छी बात न सुनी थी।

(ज़ियाए सदक़ात, स. 172)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (जो इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़ास शागिर्द और फ़िक़्हे ह़नफ़ी के आइम्मा से हैं) अहले इल्म लोगों के साथ ख़ास त़ौर पर भलाई करते, उन से अ़र्ज़ की गई : आप सब के साथ एक सा मुआ़मला क्यूं नहीं रखते ? फ़रमाया मैं अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बा'द उ़लमा के

www.dawateislami.net

सिवा किसी के मक़ाम को बुलन्द नहीं जानता, एक भी आ़लिम का ध्यान अपनी ह़ाजात की वजह से बटेगा तो वोह सह़ीह़ तौ़र पर ख़िदमते दीन न कर सकेगा और दीनी ता'लीम पर उस की दुरुस्त तवज्जोह न हो सकेगी। लिहाज़ा उन्हें इ़ल्मी ख़िदमत के लिये फ़ारिग़ करना अफ़्ज़ल है। (ज़ियाए सदक़ात, स.172)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी अपने अन्दर राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा बेदार करना चाहते हैं तो आइये दा'वते इस्लामी के प्यारे प्यारे मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने की बरकत से हमारे अन्दर भी दीगर सिफ़ाते अ़ज़ीमा पैदा होने के साथ साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में सदक़ा व ख़ैरात करने की नफ़ीस आ़दत भी पैदा हो जाएगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

किताब 'ज़ियाए सदक़ात' का तआ़रुफ़

सदक़े से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी की मत़बूआ़ 415 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब 'ज़ियाए सदक़ात' का मुत़ालआ़ा बे इन्तिहा मुफ़ीद है। येह किताब 19 अबवाब पर मुश्तमिल है और हर बाब में सदक़े से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर सैर ह़ासिल (या'नी तफ़्सीली) गुफ़्तगू की गई है, मसलन सदक़ा के मा'ना व अक़्साम, ज़कात का बयान, ज़कात किसे दी जाए ? सिलए रेह़मी (रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के फ़ज़ाइल, माल जम्अ़ करना कैसा ? बुख़्ल की मज़म्मत वग़ैरा वग़ैरा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस का मुत़ालआ़ा करने वाले को मा'लूमात का ढेरों ढेर ख़ज़ाना ह़ासिल होगा, लिहाज़ा मक्तबतुल मदीना से इस किताब को हदिय्यतन ले कर पढ़ने की मदनी इल्तिजा है।

दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से इस किताब को पढ़ा (Read किया) भी जा सकता है, डाऊन लोड (Download) भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आऊट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज हम ने सदक़ा व ख़ैरात करने की बरकात के मौज़ूअ़ पर बयान सुना, जो लोग इख़्लास के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में सदक़ा कर के नेकी का काम करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को (ह़स्बे इख़्लास) दुगना या इस से भी ज़ियादा अ़ता फ़रमाता है । नफ़्अ़ बख़्श माल वोही है जो हम बतौ़रे सदक़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करें और जो कुछ हमारे पास मौजूद है वोह तो मौत आते ही दूसरों का हो जाएगा । अ़क़्लमन्द वोही है जो एह़सान जताए बिग़ैर अपने माल के ज़रीए़ ह़क़ीक़ी गुरबा बिल ख़ुसूस दीनी त़लबा की ख़िदमत करे और क़ुरआनो ह़दीस में बयान कर्दा सदक़े के फ़ज़ाइल व बरकात का ह़क़दार बन जाए । सदक़ा करने वाले के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ज़बरदस्त अज्रो सवाब है और अह़ादीसे मुबारका की रू से सदक़ा करने वाला न सिर्फ़ क़ब्र की गर्मी से मह़फ़ूज़ रहेगा बल्कि रोज़े क़ियामत भी अपने सदक़े के साए में होगा, सदक़े की बरकत से ख़त़ाए मिट जाती हैं, बलाएं टल जाती हैं, उ़म्र में बरकत होती है, तकब्बुर की आ़दते बद से नजात मिलती है, बुरे ख़ातिमे से ह़िफ़ाज़त होती है, सदक़ा इन्सान और जहन्नम के दरमियान आड़ बन जाता है और उस ख़ुश बख़्त को ग़ज़बे इलाही से अमान नसीब हो जाती है ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से नफ़रत और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़ता कर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करें और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से मदनी इन्आ़मात का रिसाला ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना या'नी अपने मुह़ासबे के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी या'नी क़मरी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के मदनी इन्आ़मात के

www.dawateislami.net

ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारी ज़िन्दगी में हैरत अंगेज़ तौर पर मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये आ़शिक़ाने रसूल के बे शुमार मदनी क़ाफ़िले 12 माह, एक माह (30 दिन), 12 दिन और 3 दिन के लिये शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं, मुल्क ब मुल्क सफ़र करते रहते हैं, हम भी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र कर के अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर अपनी रोज़ मर्रा की दुन्यावी मस्रूफ़िय्यात तर्क कर के कुछ दिनों के लिये अपने घर वालों और दोस्तों की सोह़बत छोड़ कर जब हम इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करेंगे तो सफ़र के दौरान हमें अपने त़र्ज़े ज़िन्दगी पर दियानत दाराना ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मुयस्सर आएगा, अपनी आख़िरत को बेहतर से बेहतर बनाने की ख़्वाहिश दिल में पैदा होगी, जिस के नतीजे में अब तक किये जाने वाले गुनाहों के इर्तिकाब पर नदामत महसूस होगी, इन गुनाहों की मिलने वाली सज़ाओं का तसव्वुर कर के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, दूसरी त़रफ़ अपनी नातूवानी व बे कसी का एह़सास दामन गीर होगा और कुछ बईद नहीं कि ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब आंखों से बे इख़्तियार आंसू छलक कर रुख़्सारों पर बहने लगें। मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के इ़लावा अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत कर के ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की मदनी बहारें लूटें। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी दुन्या के तक़रीबन 200 मुमालिक तक अपना मदनी पैग़ाम पहुंचा चुकी है और 95 से ज़ाइद शो'बों में दीन की ख़िदमत करने और सुन्नतों की धूमें मचाने में मस्रूफ़े अ़मल है, आइये आप को दा'वते इस्लामी के शो'बों में से एक शो'बा '**मजलिसे उ़श्र व अत़राफ़ गाऊं**' का मुख़्तसर तआ़रुफ़ पेश करता हूं।

मजलिसे उ़श्र व अत़राफ़ गाऊं का क़ियाम

आज कल इ़ल्म से दूरी और दुन्यादारी ने काश्त कार इस्लामी भाइयों को उ़श्र व ज़कात जैसी अ़ज़ीम इबादत की अदाएगी से दूर कर रखा है। चुनान्चे, मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही और उ़श्र की अहम्मिय्यत के पेशे नज़र

www.dawateislami.net

मुसलमानों में इस अ़ज़ीम माली इबादत को अदा करने का शुऊ़र बेदार कर के रिज़ाए रब्बुल अनाम के काम करने और अ़द्मे अदाएगी के गुनाह से बचाने के लिये तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त **'मजलिसे उ़श्र व अत़राफ़ गाऊं'** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है। उ़श्र दर हक़ीक़त ज़कातुल अर्द़ (ज़मीन की ज़कात) है। ज़मीन में जो फ़स्लें वग़ैरा होती हैं, उस का दसवां या बीसवां ह़िस्सा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना ज़रूरी है। बहारे शरीअ़त में है : उ़श्री ज़मीन से ऐसी चीज़ पैदा हुई जिस की ज़राअ़त से मक़्सूद ज़मीन से मनाफ़ेअ़ ह़ासिल करना है तो उस पैदावार की ज़कात फ़र्ज़ है और उस ज़कात का नाम उ़श्र है, या'नी दसवां ह़िस्सा कि अक्सर सूरतों में दसवां ह़िस्सा फ़र्ज़ है, अगर्चे बा'ज़ सूरतों में निस्फ़ उ़श्र या'नी बीसवां ह़िस्सा लिया जाएगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा. 5, स. 913)

लिहाज़ा अय्यामे उ़श्र में हफ़्तावार और दीगर इजतिमाआ़त में राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल बयान कर के दा'वते इस्लामी को उ़श्र देने और जम्अ़ करने की तरग़ीब दिलाई जाती है, नीज़ नुमायां जगहों पर बेनर भी आवेज़ां किये जाते हैं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बारह ﴿12﴾ मदनी काम कीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप से भी मदनी इल्तिजा है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और नेकी के कामों में मज़ीद तरक़्क़ी के लिये दा'वते इस्लामी के बारह (12) मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** भी है, इस मदनी काम में शहर व डिवीज़न के कमज़ोर अ़लाक़ों या वोह अत़राफ़ (गाऊं/देहात/गोठ) जहां अभी मदनी काम शुरूअ़ नहीं हुवा या वहां मज़ीद मदनी काम मज़बूत़ करने की ज़रूरत है, छुट्टी के दिन, वक़्त

www.dawateislami.net

मख़्सूस कर के वहां के मक़ामी इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन को मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में अ़मली तौ़र पर शामिल होने की तरग़ीब दिलाने की कोशिश की जाती है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज के पुर फ़ितन दौर में तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक 'दा'वते इस्लामी' सुन्नतों भरा पाकीज़ा मदनी माहोल मुहय्या कर रही है। लिहाज़ा आप भी दा'वते इस्लामी के ख़ुशगवार मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से इस मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर न जाने कितने गुनाहगारों को तौबा की तौफ़ीक़ मिली और अब वोह सलातो सुन्नत के पाबन्द हो कर एक बा अ़मल व बा किरदार मुसलमान की हैसिय्यत से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। आइये तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं।

मैं पतंग बाज़ी का शौक़ीन था

बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है : अफ़्सोस ! मेरी पिछली ज़िन्दगी सख़्त गुनाहों में गुज़री, मैं पतंग का शौक़ीन था नीज़ वीडीयो गेम्ज़ और गोलियां खेलना वग़ैरा मेरे मशाग़िल में शामिल था। हर एक के मुआ़मले में टांग अड़ाना, ख़्वाह म ख़्वाह लोगों से लड़ाई मोल लेना, बात बात पर मार धाड़ पर उतर आना वग़ैरा मेरे मा'मूलात थे। ख़ुश क़िस्मती से एक इस्लामी भाई की इनफ़िरादी कोशिश पर मैं रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे में अपने अ़लाक़े की मस्जिद में मो'तकिफ़ हो गया। मुझे बहुत अच्छे अच्छे ख़्वाब नज़र आए और ख़ूब सुकून मिला। मैं ने मज़ीद दो साल ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की। एक बार हमारी मस्जिद के मुअज़्ज़िन साह़िब इनफ़िरादी कोशिश कर के मुझे तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ले आए। एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी बयान कर रहे थे, सफ़ेद लिबास में मल्बूस, चेहरे पर एक

www.dawateislami.net

मुश्त दाढ़ी और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजा हुवा था। ऐसा बा रौनक़ चेहरा मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार देखा था। मुबल्लिग़ के चेहरे की कशिश और नूरानिय्यत ने मेरा दिल मोह लिया और मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में आ गया और अब दो साल से आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना, कराची) ही में ए'तिकाफ़ करता हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है: जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ الصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चलने की सुन्नतें और आदाब

﴿1﴾ पारह 15 **सूरए बनी इसराईल** आयत 37 में इरशादे रब्बुल इ़बाद है:

وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۷﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل: ۳۷)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:** और ज़मीन में इतराता न चल, बेशक तू हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा।

﴿2﴾ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है: एक शख़्स दो चादरें ओढ़े हुए इतरा कर चल रहा था और घमन्ड में था, वोह ज़मीन में धंसा दिया गया, वोह क़ियामत तक धंसता ही जाएगा। (صحیح مسلم ص ۱۱۵۶ حدیث ۲۰۸۸)

www.dawateislami.net

﴾3﴿ रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चलते तो किसी क़दर आगे झुक कर चलते गोया कि आप बुलन्दी से उतर रहे हैं।

(الشمائل المحمدية للترمذی ص۸۷ رقم ۱۱۸)

﴾4﴿ अगर कोई रुकावट न हो तो रास्ते के कनारे कनारे दरमियानी रफ़्तार से चलिये, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप की त़रफ़ उठें कि दौड़े दौड़े कहां जा रहा है ! और न इतना आहिस्ता कि देखने वाले को आप बीमार लगें।

﴾5﴿ राह चलने में परेशान नज़री (या'नी बिला ज़रूरत इधर उधर देखना) सुन्नत नहीं, नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े पर चलिये।

﴾6﴿ चलने या सीढ़ी चढ़ने उतरने में येह एह़तियात़ कीजिये कि जूतों की आवाज़ पैदा न हो।

﴾7﴿ रास्ते में दो औ़रतें खड़ी हों या जा रही हों तो उन के बीच में से न गुज़रें कि ह़दीसे पाक में इस की मुमानअ़त आई है। (ابوداود، ج۴ص۴۷۰حدیث۵۲۷۳)

﴾8﴿ बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि राह चलते हुए जो चीज़ भी आड़े आए उसे लातें मारते जाते हैं, येह क़त़्अ़न ग़ैर मुहज़्ज़ब त़रीक़ा है, इस त़रह़ पाउं ज़ख़्मी होने का भी अन्देशा रहता है, नीज़ अख़्बारात या लिखाई वाले डिब्बों, पेकिटों और **मिनरल वॉटर** की ख़ाली बोतलों वग़ैरा पर लात मारना **बे अदबी** भी है।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा **16** (**312** सफ़ह़ात) नीज़ **120** सफ़ह़ात की किताब ''सुन्नतें और आदाब'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह जब निकल कर
चले तू गले लगाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। (اَیضاً ص ۶۵)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ۲۷۷)

www.dawateislami.net

﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं । (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

﴾5﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ क़ुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

﴾7﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ।

(الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱)

-: मिन जानिब :-

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

Translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net